

विशिष्ट सारांश

भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान (भा.कृ.सां.अ.सं.) की स्थापना सन् 1959 में कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान के रूप में हुई तभी से यह संस्थान कृषि सांख्यिकी में अनुसंधान के साथ-साथ शिक्षण/प्रशिक्षण करने का महत्वपूर्ण दायित्व निभा रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हो रही प्रगति के दृष्टिगत इस संस्थान ने स्वयं को कृषि अनुसंधान की वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप ढाल लिया है। इस परिवर्तित परिवेश में, संस्थान को सौंपे गये कार्य हैं - सांख्यिकी में मौलिक, अनुप्रयुक्त और अनुकूली शोध करना, कृषि सांख्यिकी एवं संगणक अनुप्रयोग में स्नातकोत्तर एवं सेवाकालीन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चलाना, परामर्श सेवाएँ प्रदान करना, अनुसंधान हेतु कृषि सांख्यिकी में सूचना कोष के रूप में कार्य करना, कृषि सांख्यिकी एवं संगणक अनुप्रयोग में श्रेष्ठ शिक्षा व प्रशिक्षण के एक उच्च अध्ययन केन्द्र के रूप में संस्थान को विकसित करना, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के अन्य संस्थानों एवं राज्य कृषि विश्वविद्यालयों (रा.कृ. वि.), राज्य कृषि/पशुपालन विभागों के साथ सम्पर्क बढ़ाना, राष्ट्रीय कृषि सांख्यिकी प्रणाली को विकसित करने एवं सुदृढ़ बनाने में सहायता करना तथा इन विषयों में राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय संगठनों के द्वारा प्रायोजित अनुसंधान करना और प्रशिक्षण प्रदान करना।

इस वर्ष संस्थान के विभिन्न प्रभागों - प्रतिदर्श सर्वेक्षण, परीक्षण अभिकल्पना, जैवमिति, पूर्वानुमान तकनीक, अर्थमिति एवं संगणक अनुप्रयोग में अनेक अनुसंधान परियोजनाएँ चलायी गयीं। संस्थान में विभिन्न महत्व वाले क्षेत्रों में कुल 50 अनुसंधान परियोजनाओं के अन्तर्गत अनुसंधान कार्य किया गया जिनमें से 40 परियोजनाएँ संस्थान द्वारा, 01 ए.पी. सेस फ़ंड द्वारा, 06 बाह्य एजेंसियों द्वारा वित्त पोषित थीं तथा 03 परियोजनाएँ अन्य संस्थानों के सहयोग से चलायी गयीं। इस वर्ष कुल 08 परियोजनाएँ पूर्ण की गयीं तथा 11 नयी परियोजनाएँ आरम्भ की गयीं।

कुछ प्रमुख अनुसंधानिक उपलब्धियाँ इस प्रकार हैं:

- वांछित दक्षता सहित सम-संख्यक रनों के लिए संतुलित तथा विषम संख्यक रनों के लिए लगभग संतुलित द्वि-स्तरीय सुपरसेचुरेटेड अभिकल्पनाएँ (SSDs) तैयार करने के लिए कॉलमवार निर्देशांक विनिमय एवं प्रतिस्थापन एल्गोरिथ्म विकसित की गयी। बहु-स्तरीय सुपरसेचुरेटेड अभिकल्पनाएँ प्राप्त

करने के लिए निर्देशांक विनिमय एल्गोरिथ्म में पुनवृत्तित वैब की अवधारणा का समावेश किया गया।

- गहन संगणक सहयोगी सर्च के माध्यम से संतुलित एवं असंतुलित मिश्रित स्तरीय सुपरसेचुरेटेड अभिकल्पनाएँ प्राप्त करने के लिए कॉलम निर्देशांकों के विनिमय एवं प्रतिस्थापन पर आधारित एक एल्गोरिथ्म विकसित किया गया। असममिति के कारण विनिमय एवं प्रतिस्थापन इस तरह संशोधित किया गया है कि स्तर असमान होने पर भी अभिकल्पना में दो कारकों के स्तर की युगलतः उपस्थिति सम्बन्धित स्तरों की उपस्थिति की आवृत्ति के प्रति अनुपातिक हो। मिश्रित स्तरीय सुपरसेचुरेटेड अभिकल्पनाओं का एक कैटलॉग तैयार किया गया है।
- संतुलन सहित आर्थोगोनल बहुउपादानिय ट्रीटमेन्ट संरचना (ओ.एफ.एस.) वाली ब्लॉक अभिकल्पनाएँ तैयार करने की एक विधि प्राप्त की गयी है जिसमें समस्त मुख्य प्रभाव संतुलित हैं अर्थात् इन्हें पूर्ण दक्षता के साथ आकलित किया गया है। ओ.एफ.एस. तथा संतुलन वाले तीन उपादानों वाले परीक्षणों के लिए अभिकल्पनाओं का एक कैटलॉग तैयार किया गया।
- खाद्य संसाधन परीक्षणों में उपयोगी पूर्ण/अपूर्ण बहु-अनुक्रिया परीक्षणों के लिए कुछ संघटकों के युगपत-इष्टतमीकरण के लिए एक प्रक्रिया विकसित की गयी है।
- संतुलित अपूर्ण ब्लॉक अभिकल्पनाओं, जो व्यापक रूप से डिग्री एक तथा/अथवा डिग्री k (ब्लॉक आकार) के प्रति प्रतिरोधी है, की पहचान कर सूचीबद्ध किया गया।
- परीक्षण उपचारों - नियंत्रित उपचार तुलनाएँ करने के लिए प्रतिवेशी संतुलित ब्लॉक अभिकल्पनाएँ प्राप्त की गयीं। लुप्त प्रेक्षणों के प्रति रॉबस्ट प्रतिवेशी संतुलित ब्लॉक अभिकल्पनाओं की पहचान कर सूचीबद्ध किया गया।
- डिजाइन रिसोर्सेज सर्वर पर मिश्रणों के परीक्षणों, परस्पर लाम्बिक लेटिन स्कवेयर्स तथा लाम्बिक अरेज का ऑन-लाइन जनरेशन, बहुउपादानिय पूर्ण यादृच्छिकीकृत अभिकल्पनाओं एवं बहुउपादानिय यादृच्छिकीकृत पूर्ण ब्लॉक अभिकल्पनाओं का ऑन-लाइन जनरेशन के लिंक देकर सुदृढ़ बनाया गया है।

- ऐसी परीक्षाणात्मक परिस्थितियों के लिए जिनमें विभिन्न समयावधियों में दो या दो से अधिक कारकों, जैसे - उर्वरकों के प्रकार, उर्वरक एवं पीड़कनाशी स्प्रे, उर्वरक एवं सिंचाई फीड एवं दवाईयाँ, दो या दो से अधिक प्रकार के फीड्स इत्यादि के अनुक्रिया प्रभावों को मापने की आवश्यकता होती है, उपचार कॉम्बिनेशन्स के फर्स्ट आर्डर अवशेष प्रभावों के लिए सन्तुलित दो या दो से अधिक अन्योन्यक्रिया कारकों के उपचार के सीक्वेन्स वाली अभिकल्पनाओं की श्रेणी तैयार की गयी है तथा उपचारों के कन्ट्रास्टों के प्रसरण सहित इन अभिकल्पनाओं के प्राचलों की एक सूची तैयार की गयी है ।
- परीक्षाणात्मक परिस्थितियाँ जिसमें परीक्षाणात्मक इकाइयाँ विभिन्न सत्रों के दौरान विभिन्न अवधियों में उपचारों के सीक्वेन्स से इस प्रकार प्रभावित होती हैं कि एक सत्र से दूसरे सत्र में दशाएँ बदल जाती हैं के लिए उपचारों के सीक्वेन्स वाली नेस्टेड अभिकल्पनाओं की एक श्रेणी प्राप्त की गयी ।
- प्रोसेस चरों सहित मिश्रित अभिकल्पनाएँ तैयार करने के लिए प्रोजेक्शन पद्धति का उपयोग किया गया ।
- मशरूम के उत्पादन के आकलन के लिए पद्धति विकसित करने हेतु मार्गदर्शी अध्ययन के अन्तर्गत स्तरित द्वि-स्तरीय यादृच्छिक प्रतिचयन के माध्यम से प्राप्त आँकड़ों से मशरूम की उत्पादकता 4.46 कि. ग्रा./ट्रे आकलित की गयी जिसमें 1.2 प्रतिशत मानक त्रुटि थी । पूर्ण आकलन के आधार पर मशरूम की उत्पादकता 4.94 कि.ग्रा./ट्रे पायी गयी । मानक त्रुटि का परिमाण तथा दो आकलों की निकटता यह दर्शाती है कि मशरूम के उत्पादन के आकलन के लिए यादृच्छिक प्रतिदर्श सर्वेक्षण आधारित अप्रोच उपयुक्त है ।
- जिला/राज्य स्तर पर विभिन्न प्राचलों, जैसे- कृष्य क्रियाओं, संसाधनों एवं ऊर्जा उपयोग सहित अन्य गतिविधियों, के आकलन के लिए न्यूनतम प्रसरण रैखिक अनभिनत आकलकों (MVLUES) को अन्तिम रूप दिया गया । खरीफ एवं रबी मौसम के दौरान मौसम सम्बन्धी विचरण एवं कृष्य क्रियाओं व संसाधनों की औसत के आकलन के लिए भी MVLUES विकसित किये गये हैं । डेयरी के अधीन भूमि, खेती एवं सम्बद्ध कृषि के अधीन भूमि, परिवारों के पास कुल भूमि तथा सिंचाई के अधीन भूमि जैसे विभिन्न लक्षणों के प्राचलों के लिए MVLUES प्राप्त किये गये ।
- कृषीय उपस्करों एवं मशीनरी के स्तर एवं प्रोजेक्शन आकलकों पर अध्ययन के अन्तर्गत जिलावार मशीनरी सूचक, जैसे - कुल पावर (एनिमेट एवं इनएनिमेट स्रोत की पावर को मिलाकर) के प्रति मकैनिकल पावर का अनुपात प्राप्त किये गये । मशीनरी सूचक एवं औसत खाद्यान्न के बीच समूह-वार सहसम्बन्ध प्राप्त किया गया । विभिन्न माडलों के उपयोग वाली कृषीय मशीनरी के प्रोजेक्शन आकलन भी प्राप्त किये गये ।
- पंजाब राज्य के 120 चयनित मछली पालक किसानों के समाजार्थिक विश्लेषण से पता चला कि बड़े फार्मों में मछली पालन में शुद्ध लाभ-लागत अनुपात 0.62 था जो यह दर्शाता है कि बड़े फार्मों पर किये गये निवेश का प्रति रुपये प्रतिदाय बहुत अच्छा था जबकि छोटी श्रेणी के फार्मों में यह केवल 0.31 था । यह भी देखा गया कि प्रेक्षित एवं सीमांत उत्पाद के बीच का 96 प्रतिशत का अन्तर मछली पालकों के नियंत्रण में संसाधनों के अदक्ष उपयोग के कारण था ।
- उत्तर प्रदेश में जिला तथा क्षेत्रीय, दोनों स्तरों पर, आलू की उपज के पूर्वानुमान के लिए मौसम प्राचलों पर आधारित सम्बन्धित क्षेत्र के विभिन्न जिलों के आँकड़ों को पूल करके मॉडल विकसित किये गये । निर्धारण गुणांक एवं वर्ग के प्रागुक्त अवशिष्ट योग (PRESS) के आधार पर मॉडलों का कार्यनिष्पादन आँका गया । अधिकाँश स्थितियों में मॉडलों के निर्धारण गुणांक अत्यन्त ही सार्थक थे तथा PRESS का मान कम था जिससे मॉडलों के उचित रूप से फिटिंग का संकेत मिलता है । जटिल बहुपद पर आधारित मॉडलों की तुलना में मौसम सूचकांक आधारित समाश्रयण मॉडलों से पूर्वानुमान अधिक परिशुद्ध पाये गये ।
- विविक्तकर फलन तकनीक, प्रमुख घटक विश्लेषण एवं मौसम सम्बन्धी सूचकांक आधारित अप्रोच के उपयोग से जिला स्तर पर चावल एवं गन्ने की उपज के पूर्वानुमान के लिए मॉडल विकसित किये गये । विविक्तकर फलन तकनीक के माध्यम से विकसित पूर्वानुमान मॉडल, प्रमुख घटक विश्लेषण एवं मौसम सम्बन्धी सूचकांकों पर आधारित मॉडलों से बेहतर पाया गया ।
- स्टॉकास्टिक प्रोसेस मॉडलिंग तथा विविक्त अरैखिक काल श्रृंखला अप्रोच के माध्यम से पूर्वानुमान के लिए तीन आपरेटर्स, चयन, क्रॉसओवर एवं म्यूटेशन का उपयोग किया गया ।

- वर्षा वितरण तथा वर्षा आधारित फसल बीमा पर अध्ययन में व्यापक लम्बदा वितरण (GLD) के प्राचलों के आकलन के लिए मैथड ऑफ़ मूवमेन्ट्स तथा मैथड ऑफ़ मैक्सिमम लाइकलीहुड का उपयोग किया गया ।
- चावल जीनोम के फलनक घटकों में एस.एन.पी. के संगणनात्मक विश्लेषण के लिए फलनक घटकों के जिनोमिक निर्देशांक प्राप्त कर डाटाबेस में स्टोर किये गये । कृषि जैवसूचना प्रयोगशाला (ABL) के लिए एक वेब पेज विकसित किया गया है जिसमें जैवसूचना टूल्स, लोकल ब्लास्ट (BLAST) इत्यादि में लिंक्स उपलब्ध कराये गये हैं । सीक्वेन्स संरक्षण तथा BLAST रिपोर्ट के निष्पंदन के लिए *BioPerl* तथा *.cgi* सिफ़्टवेयर लिखी गयी । SNPs एवं उनके निकटवर्ती सीक्वेन्सेज को एकत्रित कर, उन्हें तैयार किये गये डाटाबेस को सुदृढ़ बनाने के लिए उपयुक्त फारमेट में प्रोसेस किया जाता है । क्वेरी सीक्वेन्स तथा डाटाबेस सीक्वेन्स के बीच समरूपता के ब्लॉकों का पता तथा परिमाण लगाने के लिए ऑन-लाइन लोकल BLAST विकसित किया गया है ।
- आनुवंशिक सहसम्बन्ध के आकलन पर आनुभविक अन्वेषणों पर अध्ययन के अन्तर्गत यह पाया गया कि आनुवंशिक सहसम्बन्ध के आकलक आमतौर पर अभिनत हैं तथा प्रतिदर्श के आकार के बढ़ने से अभिनति में पर्याप्त गिरावट आती है जबकि दो सहसम्बन्धित विशेषकों की वंशागतित्व में वृद्धि होने से इससे पर्याप्त वृद्धि होती है । नकारात्मक आनुवंशिक सहसम्बन्ध वाली जनसंख्या से तैयार किये गये प्रतिदर्श से आनुवंशिक सहसम्बन्ध के आकलन अतिमूल्यांकित किये गये हैं तथा सकारात्मक आनुवंशिक सहसम्बन्ध की तुलना में उनकी अभिनति काफी अधिक है । आनुवंशिक सहसम्बन्ध की मानक त्रुटि के बूटस्ट्रैप आकलक आमतौर पर अनुमानित मानक त्रुटि की तुलना में कम होते हैं तथा अधिकांश मामलों में प्रतिदर्श के आकार में वृद्धि होने पर यह अन्तर शून्य तक हो जाता है ।
- शून्य-स्फीत आँकड़ों के लिए लघु क्षेत्र आकलन नामक अध्ययन के अन्तर्गत यह देखा गया कि आँकड़ों में शून्य मानों का अनुपात अधिक होने पर, सापेक्ष अभिनति तथा सापेक्ष वर्ग-माध्य मूल त्रुटियों के संदर्भ में मिश्रित मॉडल के माध्यम से प्राप्त परिणाम उत्तम थे ।
- स्टैटिस्टिकल पैकेज फ़ॉर एनिमल ब्रीडिंग (एस.पी.ए.बी.) 2.1 में विभिन्न आनुवंशिक सम्बन्धों के आँकड़ों की पुनरावृत्ति, अनुकार एवं बूटस्ट्रैप तकनीकों की गणना के लिए मॉडलों को शामिल कर सुदृढ़ बनाया गया ।
- गेहूँ फ़सल प्रबन्धन पर विशेषज्ञ तंत्र में सूत्रकृमि की पहचान के लिए उप-मॉड्यूल शामिल कर सुदृढ़ बनाया गया। विशेषज्ञ तंत्र के हिन्दी मॉड्यूल के लिए एस.क्यू.एल सर्वर, जो हिन्दी भाषा के स्पोर्ट के लिए UNICODE स्वीकार करता है, का उपयोग करते हुए एक डाटाबेस तैयार किया गया है । वैरायटी सिलेक्शन मॉड्यूल का एक भाग पूरा हो चुका है । यह सिस्टम हिन्दी इंटरफ़ेस से राज्य एवं क्षेत्र मानचित्रों के माध्यम से प्रजातियाँ प्रदर्शित करता है ।
- आंशिक रूप से सन्तुलित अपूर्ण ब्लॉक (पी.बी.आई.बी.) अभिकल्पनाओं के वेब सोल्यूशन्स में क्यूबिक PBIB(3) अभिकल्पनाओं की श्रेणी के निर्माण की विधियाँ संकलित की गयीं हैं तथा इन अभिकल्पनाओं के ऑन-लाइन जनरेशन, यादृच्छिकीकरण एवं विश्लेषण के लिए कम्प्यूटर मॉड्यूल विकसित किये गये ।
- फ़सलों से सम्बन्धित डाटा मार्ट को रिडिज़ाइन करके 'नॉलेज डाटा वेअरहाउस फ़ॉर एग्रिकल्चर' को सुदृढ़ बनाया गया तथा ऑन-लाइन डी.एस.एस. में भविष्य में प्रोजेक्शन के तीन तकनीकों शामिल की गयीं । पारिवारिक सुख-सुविधाओं से सम्बन्धित जनगणना के आँकड़ों का बहुविध मॉडल डिज़ाइन किया गया तथा इसमें कुछ राज्यों के आँकड़े प्रकाशित भी किये गये । जनगणना आँकड़े (2001) के लिए ऑन-लाइन एनालिटिकल प्रोसेसिंग (OLAP) क्यूबस प्रकाशित की गयीं। जी.आई.एस. सॉफ़्टवेयर की सहायता से ऐतिहासिक आँकड़ों के आधार पर विभिन्न फ़सलों की उत्पादकता के थिमैटिक मानचित्रों को डिज़िटाइज़्ड किया गया।
- मानव शक्ति नियोजन के (PERMISNET) लिए डिसिज़न स्पॉर्ट सिस्टम की बीटा टेस्टिंग पूरी की गयी । ऑन-लाइन परमिसनेट डाटाबेस के आँकड़ों का परमिसनेट-॥ के डाटाबेस में विलयन किया गया । प्रयोक्ता मैनुअल प्रकाशित कर सिस्टम के साथ लिंक किया गया। मानव शक्ति नियोजन पर नयी रिपोर्टें भी तैयार की गयीं ।
- पी.जी. स्कूल, भा.कृ.अ.सं., नई दिल्ली के इन्टरनेट सोल्यूशन्स के लिए पी जी स्कूल की ग्रीन बुक को ऑन-लाइन बनाया गया, जहाँ से विभिन्न संकायों के विभिन्न विषयों का सिलेबस

तथा अध्याय पी.डी.एफ. तथा डॉक फारमेट में डाउनलोड किये जा सकते हैं। अन्य इन्टरनेट सोल्यूशन्स के लिए डाटाबेस स्कीम की डिजाइनिंग अर्थात् छात्र प्रबन्धन, संकाय प्रबन्धन एवं पी.जी. स्कूल प्रशासन प्रबन्धन का कार्य पूरा किया गया।

- मशीन लर्निंग अप्रोच फॉर डाटा माइनिंग के अन्तर्गत दो डाटा सेटों के अन्वेषणात्मक आँकड़ों के विश्लेषण से यह देखा गया कि आँकड़ों के विविक्तीकरण तथा विविक्तीकरण के बिना, दोनों ही स्थितियों में ANN की तुलना में स्पोर्ट वेक्टर मशीन (एस.वी.एम.) तकनीकें वर्गीकरण की बेहतर परिशुद्धता देती हैं। विविक्तीकरण आधारित एस.वी.एम. के लिए वर्गीकरण की परिशुद्धता की साधारण एस.वी.एम. से तुलना करने से पता चलता है कि विविक्तीकरण आधारित एस.वी.एम. साधारण एस.वी.एम की तुलना में बेहतर निष्पादन करता है।
- ई-लर्निंग सोल्यूशन फॉर एग्रिकल्चरल एज्यूकेशन यूजिंग MOODLE (मोड्यूलर ऑब्जेक्ट ओरिएण्टेड डायनेमिक लर्निंग एनवार्यनमेन्ट) में समीकरणों के साथ कार्यशील बनाने के लिए प्लग-इन फॉर इक्वेशन एडिटर, MOODLE के साथ समाकलित किया गया। “सेन्सीटाइजेशन वर्कशॉप ऑन कान्टेन्ट मैनेजमेन्ट फॉर ई-लर्निंग सिस्टम्स यूजिंग MOODLE” नामक एक कार्यशाला भी आयोजित की गयी। “डिस्क्रीप्टिव स्टैटिस्टिक्स” अध्याय पर एक साइट तैयार की गयी।
- आई.सी.ए.आर.डी.ए., सीरिया के सहयोग से सांख्यिकी की मूलभूत अवधारणाओं तथा परीक्षणों की अभिकल्पना पर ई-लर्निंग रिसोर्सेज विकसित कर सी.जी. ऑन-लाइन लर्निंग रिसोर्सेज (<http://learning.cgiar.org>) पर उपलब्ध करवाये गये।
- एन.ए.आई.पी. द्वारा वित्त पोषित विजनिंग, पॉलिसी अनैलिसिस ऐण्ड जेन्डर (V-PAGE) सब-प्रोग्राम II : टेक्नोलॉजी फोरकास्टिंग के अन्तर्गत उत्पादकता के आधार पर जिलों के वर्गीकरण से सम्बन्धित मॉडलिंग पहलुओं पर चावल के विस्तृत सांख्यिकीय विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि यदि निम्न उत्पादकता वर्ग वाले जिलों की प्रौद्योगिकीय आवश्यकताओं को यदि पूरा कर दिया जाए तो चावल का उत्पादन 7 प्रतिशत तक बढ़ सकता है। भारतीय कृषि के भावी विकास में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी.) के प्रभावों की, विशेष रूप से एशियाई क्षेत्र में, अनुसंधान एवं विकास से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं के संदर्भ में जाँच की गयी।

पेटेण्ट विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि वर्ष 1990 के बाद आई.सी.टी. के पेटेण्टों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हुई है। शोध-प्रकाशनों के विबलियोमैट्रिक विश्लेषण ने संकेतित किया कि आई.सी.टी. के क्षेत्र में मूलभूत अनुसंधान से अनुप्रयुक्त अनुसंधान की शोध-प्राथमिकता बढ़ी है। केन्द्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक, उड़ीसा में “भारत में चावल के लिए भावी प्रौद्योगिकीय आवश्यकताओं के पूर्वानुमान” पर एक कार्यशाला आयोजित की गयी।

- एक पैकेज “PAYBITAX” विकसित किया गया तथा वेतन-बिल, पे-स्लिप, जी.पी.एफ खातों के रखरखाव तथा विभिन्न रिपोर्टें, आयकर विवरण एवं फार्म 16, और बकाया-राशि सम्बन्धी बिल तैयार करने इत्यादि के लिए जारी किया गया। छठे वेतन आयोग के लागू होने के पश्चात “PAYBITAX” पैकेज का संशोधित वर्जन विकसित किया जिसमें कुछ अतिरिक्त सुविधाएँ हैं।
- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के परियोजना सूचना एवं प्रबन्धन प्रणाली (PIMS-ICAR) का आवश्यकता विश्लेषण एवं डाटाबेस की डिजाइनिंग का कार्य पूरा किया गया।
- केन्द्रीय सांख्यिकीय संगठन, सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा वित्त पोषित; सी.एम.एफ.आर.आई, कोचीन एवं सी.आई.एफ.आर.आई., बैरकपुर के सहयोग से “मत्स्य सांख्यिकी” पर एक मैनुअल तैयार किया गया।
- कृषि अनुसंधान डाटा पुस्तिका (ए.आर.डी.बी.) 2008 प्रकाशित की गयी जो श्रृंखला की 12वीं कड़ी है।

संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय स्तर के जर्नलों में कुल 57 शोध पत्र, 11 लोकप्रिय लेख, 07 पुस्तक अध्याय, 20 परियोजना/तकनीकी रिपोर्टें-मैनुअल, 02 पैम्प्लेट और 06 शोध पत्र सम्मेलनों/कार्यशालाओं में प्रकाशित किये गये।

वर्ष 2001-05 की अवधि की पंचवर्षीय पुनरावलोकन दल (क्यू.आर.टी.) की रिपोर्ट का भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा अनुमोदन कर दिया गया है।

भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान तथा राष्ट्रीय कृषि आर्थिकी एवं नीति अनुसंधान केन्द्र की संयुक्त अनुसंधान सलाहकार समिति की दूसरी बैठक 04 दिसम्बर, 2008 को हुई।

डॉ. वी. के. भाटिया, निदेशक, अन्तरराष्ट्रीय भारतीय सांख्यिकीय एसोसिएशन-भारत संयुक्त सांख्यिकीय बैठक (IISA-INDIA JSM) 2000 ट्रस्ट के अध्यक्ष चुने गये।

डॉ. वी. के. गुप्ता, राष्ट्रीय प्राध्यापक राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी (एन.ए.ए.एस) के फैलो चुने गये।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, नैशनल फैलो अन्तरराष्ट्रीय सांख्यिकीय संस्थान, नीदरलैण्ड्स के सदस्य चुने गये।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को इन्टरनेशनल सेन्टर फॉर एग्रिकल्चरल रिसर्च इन ड्राई एरियाज, एलिप्पो, सिरिया में तीन माह के लिए जीव-सांख्यिकीय परामर्शदाता के रूप में आमन्त्रित किया गया। उन्हें काठमांडू, नेपाल में आयोजित दक्षिण एशिया में चावल-गेहूँ प्रणाली में समेकित फसल एवं संसाधन प्रबन्धन के माध्यम से किसानों की आय एवं जीविका वृद्धि करने सम्बन्धी ए.डी.बी. परियोजना की अन्तिम रिव्यू बैठक में सहभागिता करने हेतु प्रतिनियुक्त किया गया।

डॉ. रंजना अग्रवाल को उनके लेख “कम्प्यूटर की कहानी उसी की जुबानी” पर केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् द्वारा आयोजित 26वीं अखिल भारतीय वैज्ञानिक तथा तकनीकी विषयों पर हिन्दी लेख प्रतियोगिता के अंतर्गत अखिल भारतीय महिला विशेष पुरस्कार मिला।

श्री के.के. चतुर्वेदी, वैज्ञानिक को ‘सोसाइटी फोर रीसेन्ट डिवेलपमेन्ट इन एग्रिकल्चर द्वारा “साइन्टिस्ट ऑफ़ दि ईयर” पुरस्कार प्रदान किया गया।

डॉ. हुकुम चन्द्र, वैज्ञानिक को ‘इन्टरनेशनल एसोसिएशन ऑफ़ सर्वे स्टेटिशनियन्स’ द्वारा “कोकरान हेनसेन पुरस्कार - 2009” के लिए चुना गया।

डॉ. (श्रीमती) सुशीला कौल को ‘आर्थिक एवं मानव संसाधन विकास एसोसिएशन’ द्वारा “बेस्ट एज्यूकेशन परफॉरमेन्स पुरस्कार - 2007” प्रदान किया गया। उन्हें इन्टरनेशनल को-ऑपरेटिव्स अलायन्स द्वारा हैनोई, वियतनाम में आयोजित ‘5वीं एशिया-पैसिफिक को-ऑपरेटिव रिसर्च कॉन्फ़ेन्स’ में सहभागिता करने हेतु प्रतिनियुक्त किया गया।

डॉ. हिमाद्री घोष, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने ‘96वीं भारतीय विज्ञान काँग्रेस’ के गणितीय विज्ञान अनुभाग में “श्रेष्ठ पोस्टर प्रस्तुति” पुरस्कार प्राप्त किया।

संस्थान के वैज्ञानिकों को अनेक राष्ट्रीय/अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलनों में शोध-पत्र प्रस्तुत करने के लिए प्रतिनियुक्त किया गया।

हिन्दी को प्रोत्साहन देने के लिए संस्थान में एक शोध-पत्र-पोस्टर-प्रदर्शन प्रतियोगिता आयोजित की गयी जिसमें हिन्दी पोस्टर तैयार करने में उल्लेखनीय योगदान देने वाले कर्मियों को पुरस्कृत किया गया।

सांख्यिकीय विज्ञान के पाठ्यक्रम पर चर्चा करने के लिए सांख्यिकीय विज्ञान पर “ब्रोड सब्जेक्ट मेटर एरियाज (बी.एस.एम.ए.)” समिति की एक कार्यशाला आयोजित की गयी।

“कृषि में ई-संसाधन के लिए कंसोर्टियम” (CeRA) पर एक इन्ट्रेक्टिव कार्यशाला आयोजित की गयी जिसमें पोर्टल की सुविधाओं, लक्षण और क्षमता के सम्बन्ध में जानकारी दी गई।

इस वर्ष निम्नलिखित दस प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये:

- (i) ऑन-लाइन ई-लर्निंग प्रणाली के लिए विषय वस्तु का विकास; (ii) कृषि में डाटा माइनिंग; (iii) कृषि अनुसंधान में उन्नत मात्रात्मक तकनीकें तथा (iv) प्रतिदर्श सर्वेक्षण आँकड़ों के विश्लेषण में नवीनतम उन्नतियाँ विषयों पर उच्च अध्ययन केन्द्र के अन्तर्गत चार 21 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- कृषि परीक्षणों की अभिकल्पना एवं विश्लेषण में विकास विषय पर एक शीतकालीन स्कूल।
- एन.ए.आई.पी. परियोजना विजनिंग, नीति विश्लेषण एवं जेन्डर (V-PAGe) के अन्तर्गत मूल्य प्रवृत्ति एवं बाजार एकीकरण पर एक 10 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- भारतीय सांख्यिकीय सेवा (XXVIII cSp) के परिवीक्षाधीन अधिकारियों के लिए केन्द्रीय सांख्यिकीय संगठन द्वारा प्रायोजित सांख्यिकीय विधियों से आँकड़ों का विश्लेषण विषय पर 26 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् के वैज्ञानिकों के लिए अनुसंधान पद्धति पर दो सप्ताह का एक प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- आई.सी.ए.आर.डी.ए. एलिप्पो, सिरिया में कृषि सूचना प्रबन्धन, परीक्षात्मक अभिकल्पना एवं आँकड़ों का विश्लेषण नामक विषय पर परामर्शदात्री सेवा के अंश के रूप में एक अन्तरराष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम।

- अफगानिस्तान के प्रतिभागियों के लिए खाद्य एवं कृषि संगठन द्वारा प्रायोजित भारतीय कृषि सांख्यिकी प्रणाली पर एक अध्ययन दौरा ।

संस्थान की शिक्षण एवं प्रशिक्षण सम्बन्धी गतिविधियाँ, जिनमें समस्त स्नातकोत्तर अध्यापन कार्यक्रमों का नियोजन, आयोजन एवं समन्वयन शामिल है, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के पी.जी. स्कूल के सहयोग से चलायी गयीं । इस वर्ष कुल 09 छात्रों (03 पीएच.डी. (कृषि सांख्यिकी), 05 एम.एससी. (कृषि सांख्यिकी) एवं 01 एम.एससी. (संगणक अनुप्रयोग)) ने अपना डिग्री पाठ्यक्रम पूरा किया । 19 नये छात्रों (05 पीएच.डी. (कृषि सांख्यिकी), 06 एम.एससी. (कृषि सांख्यिकी) एवं 08 एम.एससी. (संगणक अनुप्रयोग)) को प्रवेश दिया गया ।

भारत एवं सार्क देशों सहित अन्य विदेशों के अनुसंधान संस्थानों / विश्वविद्यालयों में सांख्यिकीय आँकड़ों के संकलन, विश्लेषण एवं

विवेचना के कार्यों में लगे शोधकर्ताओं के लाभार्थ “कृषि सांख्यिकी एवं संगणक” में एक उच्च प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम आयोजित किया गया । इस प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम में 06 अधिकारियों ने सहभागिता की ।

संस्थान का पुस्तकालय राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रणाली (NARS) के अन्तर्गत देश का एक क्षेत्रीय पुस्तकालय है जो संस्थान के प्रयोक्ताओं के साथ-साथ अन्य अनुसंधान संगठनों के प्रयोक्ताओं की सूचना सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है । पुस्तकालय की सेवाओं को पूरी तरह डिजिटलाइज़्ड कर दिया गया है जो पुस्तकालय की वेबसाइट (<http://lib.iasri.res.in>) पर उपलब्ध है । इसमें पुस्तकालय में उपलब्ध सभी संसाधनों और सेवाओं के लिंक भी दिये गये हैं ।

